शबे-क़द्र –
उत्तमता व महत्व

रमज़ान का महीना रमहतों तथा बरकतों का महीना है। इबादत की कसरत तथा नमाज़ों की पाबंदी का महीना है। खियाम के प्रबंध में डूब जाने तथा दुरूद व सलाम और ज़िक्र में व्यस्त रहने का महीना है।

मोमिन बन्दा इस महीने में लगातार दान व परोपकार का समापन, अच्छे व भले चीज़ों को करता तथा बुराई से बचने में अपने दिन-रात बिताता है। अतः इस मुबारक महीने में सम्पूर्ण मुसलमान अच्छाई-भलाई के पैकर बन जाते हैं।

अवश्य यह रमज़ान के महीने का फैज़ान है के वह पापी मनुष्यों को धर्मनिष्ठता व धार्मिकता का आदी बना देता है एवं इबादत व रियाज़त का सारांश पहना कर इन्हें आभूषण कर देता है।

रमज़ान वह महीना जिस में मुसलमान समुदाय के लिए पापों की बख्शिश का सामान प्रदान किया गया। साथ ही साथ नेकियों का सम्मान व आदर बढा दी गई तथा इस की बरकत से शरीअत के सवाब व पुण्य में समावेश कर दिया गया।

इसी मुबारक महीने में एक ऐसी पावन व पूज्य रात बन्दों को प्रदान की जाती है, जो 100 महीनों से श्रेष्ठतर व उत्तम है, जिस का नाम “लैलतुल क़द्र” है।

शबे क़द्र महिमा व उत्तमता तथा बरकत वाली रात है। यह क़ुरान के प्रकट की वह पावन रात है जिस में फरिश्तों का प्रकटन होता है तथा इस रात में अल्लाह तआ़ला इ़बादत व पालन में व्यस्त रहने वाले सत्य सेवकों को 1000 महीनों की इ़बादतसे बढ कर सवाब व पुण्य दान करता है। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- निस्संदेह हम ने इस (क़ुरान) को क़द्र की रात में अवतरित किया। तुम्हें क्या मालूम के शबे क़द्र कया है? क़द्र की रात उत्तम है 1000 महीनों से। इस (रात) फरिश्ते और रूह अपने रब के आदेश से हर काम (के प्रबंध) के लिए (धरती पर) उतरते हैं। वह रात पूर्णतः शांति और सलामती है, और वह उषाकाल के उदय होने तक (अपनी बरकतों के साथ) रहती है।

(सुरह अल खद्रः 97:1-5)

शबे क़द्र का कारण

इस रात को क़द्र की रात क्यों कहा जाता है। इसे क़द्र वाली रात कहन का कया कारण है। इस से संबंधित विद्वान लोग जो वर्णन की जाती है, जिस की बिना इसे क़द्र की रात कहा जाता है।

प्रथम कारणः क़द्र का अर्थ सम्मान व आदर के हैं, यह शब्द सम्मान का अर्थ में इस आयत करीमा में उपयोग हैः

भाषांतरः- उन्होंने अल्लाह तआ़ला की क़द्र ना जानी, जैसी उसकी क़द्र जाननी चाहिए।

(सुरह अल अनआमः 06:91)

तफसीर अ़ल्लामा अबुल हसन अ़ली बिन मुहम्मद खाज़िन रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः- इस रात को अन्य रातों पर इस के सम्मान व प्रतिष्ठा तथा कृपा के कारण “लैलतुल क़द्र” से संबंध किया गया है।

(अल बाबुल तावील, फी मआ़नी अल तंज़ील, सुरहल अल क़द्र, 01)

ज्ञात हुआ के यह रात शान व महिमा तथा प्रतिभा व वैभव वाली रात है। इसी लिए इस का नाम *लैलतुल क़द्र* रखा गया।

दुसरा कारणः जिस प्रकार वह रात प्रतिष्ठा व उत्तमता वाली है। इसी प्रकार इस रात किया जाने वाला कर्म भी अल्लाह के दरबार में स्वीकार एवं बडी उत्तमता व उत्कृष्टता वाला होता है। अर्थात इस रात नेक कर्म कर के मोमिन बन्दा इसे स्वीकृत के दरवाज़े तक पहुंचाता है। इस बुनियाद पर भी इसे लैलतुल क़द्र कहा जाता है।

जैसा के तफसीर खाज़िन के लेखक लिखते हैः-

भाषांतरः- और इसे *क़द्र* इस लिए कहा जाता है के इस रात बन्दे का नेक कर्म अल्लाह के दरबार में स्वीकृत के कारण बड़ी क़द्र वाला हो जाता है।

(अल बाबुल अल तावील फी मआ़नी अल तंज़ील, सुरह अल खद्रः 01)

तीसरा कारणः क़द्र तंगी को कहते हैं। इस का अर्थ तंग हो जाने के भी हैं। अल्लाह के कलाम में शब्द क़द्र तंगी के अर्थ में उपयोग हुआ है। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और जिस पर उसकी रोज़ी तंग (नपी-तुली) कर दिया गया वह इसी में से खर्च करे जो इसे अल्लाह तआला ने प्रदान किया है।

(सुरह अल तलाक़ः 65:07)

इस का तात्पर्य यह नहीं होगा के यह रात बन्दों के लिए तंगी की रात है। वास्तव में इस रात इबादत गुज़ारों से मुलाकात के लिए कसरत व अधिकता से फरिश्ते प्रकट होते हैं। जिस के कारण से पृथ्वी तंग हो जाती है। अर्थात तफसीर ज़ाज़िन के लेखक लिखते हैः-

भाषांतरः- इस रात को इस लिए क़द्र की रात कहा जाता है, क्यों के इस रात पृथ्वी फरिश्तों (की पादर्पण के कारण) से तंग हो जाती है।

(अल बाबुल तवाीी फी मआनी अल तंज़ील, सुरह अल क़द्र 01)

चौथा कारणः इस पावन रात को क़द्र की रात कहे जाने का एक और कारण हज़रत मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने इस प्रकार वर्णन किया हैः-

या *क़द्र* इस लिए के (1) किताब क़द्र के योग्य, (2) रसूल क़द्र के योग्य प्रज्ञानता, (3) समुदाय क़द्र के योग्य पर उतारा, इस लिए सुरह क़द्र में "लैलतुल क़द्र" का शब्द 3 समय आया है। (फज़ाइल रमज़ान, पः 107) जैसा के तफसीर खुरतुबी लिखित है। (तफसीर अल खुरतुबी, सुरह अल खद्रः 01)

क़द्र की रात को भलाई तथा प्रतिभा बजालाना अहले इमान पर अनिवार्य है। एक तो इस प्रकार के इस रात की उत्तमता व प्रतिष्ठा अपने मन में बसाय रखें। दूसरे इस रूप से के इबादतें, ज़िक्र आदि संपादन करते रहें तथा निषिद्ध कार्य तथा पापों से दूर रहें।

क़द्र की रात की प्रतिष्ठा निर्वाह रखने वाले बन्दे निस्संदेह अल्लाह तआ़ला की ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतों व वरदानों के योग्य व निर्वाच्य बनेंगे। इन के कर्म अल्लाह तआ़ला के दरबार से स्वीकृत की कृपा प्राप्त करेंगे तथा प्रतिभा व वैभव वाले घोषित किए जाएंगे।

क़द्र की रात का प्रवरण

अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को प्रथम व अंतिम के सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान फरमाए हैं। पूर्ण इन के रब ने हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को क़द्र की रात की तारीक़ का भी संग्रह ज्ञान प्रदान किया।

अर्थात ज़ुजाजातुल मसाबीह में इमाम मालिक, इमाम शाफअ़ तथा इमाम अबु अ़वाना रहीमुल्लाह के हवाले से रिवायत लिखित हैः-

भाषांतरः- मोमिनों की मां हज़रत सैयदा आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से वर्णित है, वह फरमाती है के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाया के मैं ने इस रात (यथा क़द्र की रात) को रमज़ान में देखा किन्तु जब 2 मनुष्यों ने आपस में झगडा किया तो (क़द्र का प्रवारण) उठा लिया गया।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह)

क़द्र की रात के लक्षण

क़द्र की रात के क्या लक्षण है? हम कैसे आशंका लगाएं के हम ने क़द्र की रात पा ली है? इस सिलसिले में हमें हदीसों से ज्योति मिलती है। इमाम सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी विस्तार “दुर्रे मनसूर” में तफसीली रिवायत व्याख्या की हैः-

भाषांतरः- और इमाम अहमद, इमाम इब्न जुरैम, इमाम मुहम्मद बिन नसर, इमाम बैहखी तथा इमाम इब्न मरदुयह ने हज़रत उबादह बिन सामित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित की है क इन्हों ने हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से क़द्र की रात के बारे में प्रश् किया तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह रमज़ान के अंतिम अशरे में हुआ करती है। क्यों के वह ताक़ रात में हुआ करती है, या तो 21 रात, या 23 रात, या 25 रात, या 27 रात, या 29 रात, या रमज़ान की अंतिम रात में होती है। जो व्यक्ति इमान की हालत सवाब व पुण्य के उद्देश्य से इस रात निवास करे तो इस के गुज़रे हुए पाप बख्श दिए जाते हैं तथा इस के यह संकेत व लक्षण हैः-

(1)- वह रात अत्यन्त रोशन व दीप्तिमान।
(2)- अधिक शफ्फाफ।
(3)- सुकून वाली।
(4)- सुहानी व शान्त।
(5)- ना गरम तथा ना ही सरद होती है। जैसे के इस रात चांद अदिक दीप्तिमान हो रहा है।
(6)- और जब तक सवेरे ना हो जाए इस रात किसी सितारे को नहीं फेका जाता।
(7)- और इस के लक्षणों में यह भी है के इस के सवेरे सूर्य सम्पूर्ण रूप से ऐसा निकल जाता है, जैसा के वह चौधवीं रात का चांद है।
(8)- और अल्लाह तआला ने शैतान पर यह हराम कर दिया है के इस दिन वह सूर्य के साथ निकले।

(अल दुर्रे मनसूर फी तफसीर अल मासूर, सुरह अल क़द्र, 02)

क़द्र की रात- समुद्र का पानी मधुर हो जाता है

क़द्र की रात के लक्षणों में यह भी वर्णन किया जाता है के इस रात समन्दर का पानी मीठा हो जाता है। इमाम राज़ी ने 27 शबे सागर का पानी मीठा होने से संबंधित एक घटना वर्णन की हैः-

भाषांतरः- हज़रत ऊसमान बिन अबु अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का एक सेवक (गुलाम) था, (इस से) आप ने फरमायाः (रमज़ान के) महीने में एक ऐसी रात है, जिस में सागर का पानी मीठी व मधुर हो जाता है, जब वह रात आई तो इस ने बताया तो वह रमज़ान की 27 रात ही थी।

(मफातीहर अल ग़ैब, सुरह अल क़द्र, 01)

इसी प्रकार तफसीर खुरतुबी में एक रिवायत है के क़द्र की रात में सागर का पानी मीठा हो जाता हैः-

भाषांतरः- हज़रत ऊबैद बिन अमीर रहमतुल्लाहि अलैह का विवरण हैः मैं (रमज़ान की) 27 रात महासागर में (यात्रा कर रहा) था, मैं समुद्र से पानी लिया तो इसे अत्यन्त मीठा और स्वादिष्ट पाया।

(तफसीर अल खुरतुबी, सुरह अल क़द्र, 01)

क़द्र की रात रमज़ान के अंतिम अशरे में-

मालूम हुआ के क़द्र की रात रमज़ान मुबारक में हुआ करती है। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इसे रमज़ान के अंतिम अशरे (10 दिन) में तलाश करने यथा अंतिम 10 रातों में इबादतों का विशेष प्रबन्ध करने का निर्देशन दिया।

जैसा के सहीह बुखारी, सहीह मुसलिम तथा जामअ़ तिरमिज़ी में हदीस पाक है:-

भाषांतरः- ऊम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा फरमाती है के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम मुबारक रमज़ान के अंतिम 10 रातों में एअ़तेकाफ फरमाया करते तथा आदेश करते थेः तुम क़द्र की रात को रमज़ान मुबारक के अंतिम 10 रातों में तलाश करो।

(सहीह अल बुखारी, हदीस संख्याः 2020 / सहीह मुस्लिम, हदीस संख्याः 2833 / जामअ़ अल तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 797)

27 रात – क़द्र की रात

हज़रत रसूल पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के आदेश से स्पष्ट हो रहा है के क़द्र की रात रमज़ान के अंतिम 10 रातों में हुआ करती है। क्योंके सहाबा किराम सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के स्वभाव तथा मंशा से अधिक ज्ञात और वही आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम) की मुबारक सुन्नतों पर श्रेष्ठतर अ़मल करने वाले हैं।

इस लिए इन से संबंधित किसी सुन्नत के विरुद्ध कार्य व अ़मल का विचार भी नहीं किया जा सकता। अर्थात वही सहाबा किराम वर्णन करते हैं के क़द्र मुबारक रमज़ान की 27 रात को हुआ करती है।

अगरचे सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर हिकमतेन इस के आधार की स्पष्टीकरण नहीं फरमाई थी। किन्तु हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा से मरवी वर्णन हदीस पाक की

रिवायत के बाद इमाम तिरमिज़ी क़द्र की रात के निर्धारित व निश्चित से संबंधित विस्तार वर्णन करते हुए लिखा हैः-

भाषांतरः- हज़रत ऊबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, वह वचन खा कर यह वर्णन करते हैं के वह (शब क़द्र) 27 रात है तथा यह फरमाते के हमें हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इस की लक्षण वर्णन किए तो हम ने इन्हें गिना और याद कर लिया।

शब क़द्र के कथन से तात्पर्य

हज़रत फारूख आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से भी ऐसी ही रिवायत है के क़द्र की रात 27 रात को हुआ करती है। इस सिलसिले में हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने सुरह क़द्र के कथन से तात्पर्य व दलील (सिद्ध) करते हुए फरमाया के सुरह क़द्र में 30 कथन हैं।

इन में *ही* (यानी वह रात) 27 कलिमा है। जिस का मरजअ़ और मुराद *लैलतुल क़द्र* है। जैसा के सहीह बुखारी की विशाल शरह फत्हुल बारी में हैः-

भाषांतरः- हज़रत ऊमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है के वह 27 रात है तथा हज़रत अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से भी इसी प्रकार की रिवायत है तथा आप ने इस नीव पर दलील व तात्पर्य किया के सुरह क़द्र में 30 कथन हैं, और शब्द *ही* (यथा वह रात) 27 कलिमा है।

(फत्हुल बारी शरह सहीह बुखारी, सुरह अल क़द्रः 03)

लैलतुल क़द्र के अक्षर से 27 रात की ओर संकेत

सुरह अल क़द्र में शब्द लैलतुल क़द्र (यानी क़द्र की रात) 3 बार उपयोग हुआ तथा *लैलुतल क़द्र* में 9 अक्षर पाय जाते हैं। और 9 को 3 में जनन कर देने से 27 प्राप्त होते हैं।

अर्थात इस 27 के तात्पर्य से भी *क़द्र की रात* 27 रात ही होने की ओर संकेत व इशारा मिलता है। जैसा के अ़ल्लामा हाफिज़ इ़ब्न हज्र असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया हैः-

भाषांतरः- और कुछ विद्वानों ने क और कारण से (क़द्र की 27 रात में होने पर) दलील व तात्पर्य दिया है। अर्थात व्याख्या हैः लैलतुल क़द्र में 9 अक्षर हैं तथा इस सरह में लैलतुल क़द्र 3 बार आया है। इस प्रकार वह 27 होते हैं।

(फत्हुल बारी, सुरह अल क़द्रः 03)

क़द्र की रात अंतिम 10 दिने में होने की हिकमत

क़द्र की रात रमज़ान के अंतिम 10 दिन में रखी गई है। इस की एक हिकमत व कारण तो यह है के जब कर्म करने वाला अपना कर्म सम्पूर्ण करता है तो इसे पुरस्कार से संबोधित किया जाता है। ऐसे ही रमज़ान मुबारक की क़द्र करने वालों तथा दोनों का प्रबन्ध करने वालों के अधिकार में अतः क़द्र की रात अल्लाह तआ़ला की ओर से एक विशाल पुरस्कार दिया जाता है।

इस की और हिकमत हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने यह वर्णन की है के सामान्य लोग के लिए: "प्रथम एवं दूसरे दहे (10 दिन) में रोज़ा आदि से ज़ईफ होगा तथा अंतिम दहे में हिम्मत व साहस कम होती है। इस लिए हिम्मत बढ़ाने के लिए क़द्र की रात नियुक्त व घोषित हुई।

इस में विशेष उतेजना की, ताकि हिम्मत बढे और रमज़ान की समाप्ति कर सकें।”

(फज़ाइल रमज़ान, पः 110)

अंतिम 10 दिन में सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का प्रबन्ध

यह मुसलमानों का विश्वास है के हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सर्वश्रेष्ठ पैगम्बर हैं। अल्लाह तआला ने आप को सरवर कौनेन बनाया है। इस के बावजूद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हम गुलामों व सेवकों का साहस व प्रोत्साहन तथा हिम्मत दिलाते हुए कसरत से इबादतों का प्रबन्ध करते।

अन्य दिनों की तुलना में मुबारक रमज़ान तथा विशेष रूप से इस अंतिम 10 दिनों में आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की इबादत की शान उच्चतम होती। जैसा के सहीह मुसलिम शरीफ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है, वह फरमाती है के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अन्य रातों की तुलना में (रमज़ान की) अंतिम 10 दिनों में इबादत करने में अधिक प्रबन्ध करते।

(सहीह मुसलिम, हदीस संख्याः 2845)

ना केवल हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम खुद इबादतों का प्रबन्ध फरमाते, बल्कि अपने अहले बैत (पावन परिवार) को भी इस की प्रकाश दिलाते तथा रात में इबादतों का निर्देश देते।

जैसा के सहीह बुखारी व सहीह मुसलिम में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- ऊम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से वर्णित है वह फरमाती है के मुबारक रमज़ान के जब अंतिम 10 दिनो शुरु हो जाते तो हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तैयार हो कर हमेशा से अधिक इ़बादत में व्यस्त हो जाते हैं तथा रात में इ़बादतों में रहते (तथा नवाफि, ज़िक्र इलाही तथा क़ुरान की तिलावत किया करते) एवं अपने घर वालों को (भी इन रातों में) जगा देते (ताकि वह भी रात में जाग कर अंतिम 10 दिन की बरकतें प्राप्त करें)।

(सहीह अल बुखारी, हदीस संख्याः 2024 / सहीह अल मुसलिम, हदीस संख्याः 2844)

क़द्र की रात की विशिष्टता

इस रात की अनोखी विशिष्टता हैं। क़ुरान करीम के आधार में इस की 6 विशिष्टता ऊजागर होती हैः-

(1)- क़द्र की रात की महत्व तथा उत्तमता व बरकत इस कर्म से स्पष्ट है के अल्लाह तआ़ला ने सम्पूर्ण एक सुरह इस की शान व प्रतिभा में प्रकट किया।

(2)- इस रात में क़ुरान का नुज़ूल व प्रकट हुआ था।

(3)- यह रात 1000 महीनों से श्रेष्ठतर है।

(4)- इस रात में फरिश्ते धरती पर आते हैं।

(5)- हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम की आगमन होती है और

(6)- सुहब सवेरे तक बन्दों पर सलामती का प्रकट होता है।

क़द्र की रात की प्रतिष्ठा

अल्लाह तआ़ला ने क़द्र की रात के द्वारा हमें एक विशाल अवसर प्रदान किया के हम इस रात इ़बादत के द्वारा पुण्य व सवाब के खजाने व कोषागार प्राप्त करें। अल्लाह तआ़ला की वरदानों से अपेन दामन को भर लें।

किन्तु कोई ऐसी विशाल अवसर क भी अज्ञानता में व्यर्थ करता है तो यह इस की महरूमी के लक्षण हैं। सुनन इ़ब्न माजह में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के रमज़ान का महीना शुरु हुआ तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः यह वह महीना है, जिस में एक रात 1000 महीनों से श्रेष्ठतर है। जो इस से महरूम व वंचित रहा वह हर भलाईसे महरूम रहा तथा इस की भलाई से वही महरूम होगा जो सम्पूर्ण महरूम व वंचित है।

(सुनन इ़ब्न माजह, हदीस संख्याः 1634)

पूर्व पाप क्षमा कर दिए जाते हैं

क़द्र की रात की उत्तमता में कई हदीसें उपस्थित हुई हैं। इस रात में इ़बादत करने तथा खियाम करने वाले के पू्र्व पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। शर्त है के वह इ़मान वाला तथा इ़क़लास वाला हो, क़द्र की रात में खियाम करने तथा इ़बादत करने के कारण से पिछले पापों की क्षमा के लिए इ़मान व अखीदा (विश्वास) आधारीय शर्त है।

इस के बिना बख्शिश के लिए सोंचना भी व्यर्थ है। अर्थात सहीह बुखारी शरीफ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमाया हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जो व्यक्ति इमान की स्थिति में पुण्य व सवाब के उद्देश्य से क़द्र की रात में इबादत करे तो इस के पूर्व व पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 35)

क़द्र की रात में फरिश्ते प्रकट हो कर मुक्ति की दुआ करते है

क़द्र की रात की एक विशेष रू यह वर्णन की गई है के इस रात फरिश्तों के आगमन होती है तथा वह अल्लाह तआला की इबादत में व्यस्त रहने वाले बन्दों के लिए रहमत व मुक्ति की दुआएं व प्रार्थना करते हैं।

अर्थात शुअबुल इमान, मिश्कातुल मसाबीह तथा ज़ुजाजातुल मसाबीह में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जब क़द्र की रात होती है तो जिब्रील अलैहिस सलाम फरिश्तों का एक झुण्ड के हमराह (धरती पर) उतरते हैं तथा प्रत्येक इस बन्दे के लिए मुक्ति के लिए प्रार्थना व दुआ करते हैं। जो खडे हो कर या बैठ कर अल्लाह तआला की याद (एवं इबादत) में व्यस्त रहते हैं।

(शुअबुल इमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3562)

70,000 फरिश्ते प्रकट होकर झण्डे लहराते हैं

सुल्तानुल ऑलिया हज़रत ग़ैसे-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी रचना अल ग़ुनयितुल तालिबी तरीक़ अल हक़ में विस्तार से हदीस का व्याख्या करते हैं के इस रात अल्लाह तआला के आदेश से हजारों फरिश्ते पृथ्वी पर आते हैं। और वह दीप्तिमान झण्डे काबे शरीफ तथा सरकार के रौज़े आदि पर गाड़ते हैं। अर्थात आदेश हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के आप ने फरमायाः जब क़द्र की रात आती है तो अल्लाह तआला हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम को आदेश फरमाता है के पृथ्वी पर उतर जाओ। आप के साथ सिदतरुल मुन्तहा के साकिन 70,000 फरिश्ते आते हैं। एवं इन के साथ नूर के झण्डे होते हैं, जब वह सब धरती पर आते है तो हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम तथा अन्य फरिश्ते अपने झण्डे चार स्थान पर गाड़ते हैः-

(1)- कअ़बा शरीफ के पास।
(2)- सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन रौज़े के पास।
(3)- मसजिद अखसा के पास।
(4)- और मसजिद तूर सीना के पास।

(अल ग़ुनियतुल तालिबी तरीक़ अल हक़, जिल्द 2, पः 14)

क़द्र की रात 1000 महीनों से उत्तम क्यों ?

शब क़द्र की विशालता व उत्तमता यह है के इस रात को 1000 महीनों से सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। किन्तु प्रश्न यह है के इस रात को इतनी

महिमा व उत्तमता क्यों दी गई तथा यह पावन रात उ़म्मते-मुहम्मदिया (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) को क्यों दी गई ? इस बारे में हदीसों से अनेक कारण सामने आती है।

विस्तार व तफसीर की पुस्तकों में यह रिवायत व्याख्या है के नबी इसराईल में ऐसी इ़बादत गुज़ार लोग थीं जो लगातार 1000 महीनों तक अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करते रहें तथा इतनी लम्बी उ़म्र में इन्हों ने कभी कोई अज्ञानता ना की।

जब सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने यह सुना तो इन्हें बहुत प्रसन्नता व खुशी हुई और साथ ही यह विचार होने लगा के हमारी उ़म्रें इतनी लम्बी नहीं, तो हम कैसे वह पुण्य व सवाब पा सकेंगे जो बनी इसराईल की इन मुबारक लोगों ने प्राप्त की तो अल्लाह तआ़ला ने रहमतुल लिलआ़लमीन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के सदखे व तुफैल और इन बुज़ुर्गान के वर्णन की बरकत से 1000 महीनों से अधिक श्रेष्ठ रात प्रदान की।

यह रिवायत आधिप्रमाणित तफसीरों में व्याख्या है। अर्थात अ़ल्लामा इ़ब्न कसीर नेभी इस हदीस पाक को अपनी तफसीर में लिखा हैः-

भाषांतरः- हज़रत अ़ली बिन उ़रवह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने एक दिन बनी इसराईल के 4 अम्बया किराम अलैहिस सलाम का वर्णन कियाः जिन्हों ने इसी 80 वर्ष तक अल्लाह तआ़ला की इ़बादत की और कभी इन्हों ने क्षण भर के लिए भी अपनी शान व महिमा के विरुद्ध कोई कार्य नहीं किया। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत अयुब, हज़रत ज़करिया, हज़रत जज़खील तथा हज़रत योशअ़ अलैहिमु सलाम का वर्णन फरमाया। रावी कहते हैः इस बात पर सहाबा किराम को

आश्चर्य हुआ, तो हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम ने उपस्थित हो कर निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! आप की समुदाय को इन 4 लोग की इबादत पर आश्चर्य हुआ के इन्हों ने इसी 80 वर्ष तक इबादत की और कभी इन्हों ने क्षण भर के लिए भी अपनी प्रतिभा के विरुद्ध कोई कार्य नहीं किया। तो अल्लाह तआला ने इस से श्रेष्ठतर शुभ-समाचार वर्णन किया। फिर हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम ने सुरह क़द्र की तिलावत की इस सूचने से सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तथा सहाबा किराम आनंदित हो गए।

(तफसीर इब्न कसीर, सुरह अल क़द्र, 03 / अल दुर्रे मनसूर, सुरह अल क़द्र 03)

उपर्युक्त रिवायत से यह बात उजागर हो रही है के पूर्व समुदाय के लिए अल्लाह की रहमत के कैसे अबवाब खुलते हैं बावजूद यह के इस समुदाय का जीवन कम हैं तथा कर्म भी छोटा है।

किन्तु अल्लाह तआला ने अपने करम व करुणा तथा अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वस्ललम के सदखे से प्रत्येक वर्ष एक ऐसी रात प्रदान किया, जिस में वह पुण्य व सवाब प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया जो पूर्व काल में इसी 80 वर्ष की कठिन परिश्रमों से पाया जा सकता था।

क़द्र की रात में वंचित कौन ?

इस रहमत व मुक्ति, दान व बख्शिश की रात भी चंद लोग महरूम व वंचित रह जाते हैं। यदि वह लोग भी अपने पापों छोट दें तथा सत्य दिल से तौबा करें तो अल्लाह तआ़ला की रहमत इन के भी शामिल हाल होगी।

इमाम बैहखी की शुअ़बुल इमान में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है के आप ने हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना.... जब क़द्र की रात आती है तो अल्लाह तआ़ला जिब्रील अलैहिस सलाम को आदेश देता है, तो वह फरिश्तों की एक विशाल जमात के हमराह पृथ्वी पर उतरते हैं। इन के साथ हरे झण्डा होता है जिसे कअ़बा शरीफ पर लगा दिया जाता है। जिब्रील अमीन (अलैहिस सलाम) को विशेष शान व प्रतिभा वाले एक 100 पर हैं, जिन में 2 पर ऐसे हैं जिन्हें वह क़द्र की रात के अतिरिक्त कभी नहीं खोलते। जब (हज़रत) जिब्रील इस रात अपने परों को खोलते हैं तो पूरब व पश्चिम ढंक जाते हैं। फिर (हज़रत) जिब्रील अलैहिस सलाम को प्रत्येक ओर फैल जाने को कहते हैं। खडे हो कर या बैठ कर इबादत करने वाले, नमाज़ पढने वाले तथा ज़िक्र इलाही में व्यस्त रहने वालों को 2 फरिश्ते सलाम करते हैं तथा इन से मुसाफा (हाथ मिलाना) करते हैं। इन की दुआओं पर आमीन कहते रहते हैं यहाँ तक के फज्र का समय हो जाता है। जैसे ही फज्र का समय होता है (हज़रत) जिब्रील अलैहिस सलाम समाचार देते हैः ऐ फरिश्तो! उम्मते-मुहम्मदिया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के मोमिनं की आवश्यकता व प्रयोजन से संबंधित अल्लाह तआ़ला ने किया निर्णय किया है? (हज़रत) जिब्रील अलैहिस सलाम फरमाते हैः इस रात अल्लाह तआ़ला ने इन की ओर रहमत की दृष्टि और विशेष ध्यान किया है। इन्हें प्रदान कर दिया तथा इन्हें, सिवाए 3 लोग के। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम वह 4

लोग कौन है? सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः

(1)- शराब का आदी।
(2)- माता-पिता का नाफरमान।
(3)- रिश्तों को तोड़ने वाला तथा
(4)- हसद रखने वाला।

(शुअ़बुल इ़मान लिल बैहकी, हदीस संख्याः 3540)

क़द्र की रात के व्यवसाय

इस पावन रात की उत्तमता व बरकत जानने के बाद अज्ञानता में पडे रहना मोमिनीन का स्तर नहीं। अर्थात मोमिन बन्दे को चाहिए के वह अल्लाह तआ़ाला की नेअ़मतों (वरदान) पर धन्यवाद करने के लिए स्नान करें।

इ़बादतों व ज़िक्र का प्रबन्ध करें। खुदा तआ़ाला को राज़ी व समहत करने और इस की प्रसन्नता प्राप्त करने कि कोशिश करें। क़द्र की रात के व्यवसाय से संबंधित एक रिवायत में आता हैः-

भाषांतरः- हज़रत ज़र बिन हबीश रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमायाः क़द्र की रात 27 रात है, तो जो कोई इसे पाय तो चाहिए के वह स्नान करे और दूध से इफतार करे।

(मुसन्नफ अबदुर रज़्ज़ाख, हदीस संख्याः 7701)

क़्दर की रात में की जाने वाली दुआ

क़द्र की रात के व्यवसाय में यह भी है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस रात पढने के लिए विशेष दुआ की शिक्षा दी के इस रात यह दुआ करेः-

लिप्यंतरणः-

"*अल्लाहुम्मा इन्नका अफ़ुवुन तुहिब्बुल अफवा फआफु अन्नी* "।

जामअ तिरमिज़ी शरीफ में मुबारक हदीस हैः-

भाषांतरः- उम्मुल मोमिनीन सैयदा आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है। वह फरमाती है के मैं ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह! सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लमः यदि मुझे क़द्र की रात मिल जाए तो इस में कया दुआ पढुँ? तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश दियाः यह दुआ करो! ऐ अल्लाह! तू बहुत क्षमा करने वाला है। और क्षमा को पसंद करता है। अतः तू मुझे क्षमा कर।

(जामअ तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 3855)

अल्लाह सुभानतआला से दुआ है के क़ुरान पाक तथा साहिब क़ुरान सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सदखे में हमारे पापों को क्षमा करे। हमें मुक्ति व मोक्ष का परवाना दान करे तथा हमें इबादत व आज्ञापालन के

द्वारा क़द्र की रात की क़द्र करने वाला और इस की रहमतों एवं बरकतों को प्राप्त करने वाला बनाए।

आमीन